सीएसआईआर-सीरी, पिलानी में द्वितीय व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम

(प्रबोध पत्राचार पाठ्यक्रम)

सीएसआईआर - केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी), पिलानी में हिंदीतर भाषी सहकर्मियों के लिए राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय, भारत सरकार की हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत चलाए जा रहे प्रबोध पत्राचार पाठ्यक्रम के लिए पंजीकृत प्रशिक्षणार्थियों के लाभार्थ **30 अप्रैल-01 मई 2015** तक द्वितीय **व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम** का आयोजन किया गया। जुलाई 2014 से मई 2015 सत्र में पंजीकृत संस्थान के 12 सहकर्मी- प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण देने के लिए केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली, से श्री करण सिंह, सहायक निदेशक संस्थान में आए थे।

कार्यक्रम के आरंभिक सत्र में **श्री रमेश बौरा, हिंदी अधिकारी** ने अतिथि का स्वागत किया तथा प्रशिक्षार्थियों को संकाय सदस्य का संक्षिप्त परिचय दिया। सभी प्रशिक्षार्थियों ने भी संकाय सदस्य को अपना परिचय दिया। इसके बाद श्री बौरा ने कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए सभी प्रशिक्षार्थियों को कार्यक्रम की उपयोगिता व महत्व की जानकारी दी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सभी प्रशिक्षार्थी हिंदी भाषा के संबंध में अपनी सभी शंकाओं का समाधान करेंगे तथा विद्वान विशेषज्ञ की उपस्थिति तथा सुदीर्घ अनुभव का लाभ उठाएँगे।

परिचय सत्र के बाद प्रशिक्षार्थियों को संबोधित करते हुए
श्री करण सिंह, सहायक निदेशक, के.हिं.प्र.सं., नई दिल्ली

तदुपरांत श्री करण सिंह, सहायक निदेशक, के.हिं.प्र.सं., नई दिल्ली ने प्रशिक्षणार्थियों को नई भाषा को सीखने का सूत्र बताते हुए कहा कि भाषा को उचित रूप से सीखने के लिए हम उसका उपयोक्ता बनने के स्थान पर यदि उसका निर्माता बनें तो उसे अपेक्षाकृत अधिक सरलता से सीखा जा सकता है। ऐसा करते हुए हमें स्वयं भाषा-उपयोग के नए-नए प्रयोग करने चाहिए। उन्होंने कहा कि हम सभी अपनी मातृभाषा के सर्वाधिक निकट होते हैं और हमारी विचार-श्रृंखला उसी भाषा में चलती है। हम उसी में मूल रूप से सोचते व कार्य करते हैं, इसीलिए हम अपना मौलिक सृजन (कविता, कहानी आदि) बेहतर ढंग से उसी में कर सकते हैं। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि नई भाषा सीखना हमेशा प्रेरक होता है और आप इस प्रशिक्षण के माध्यम से सभी सामान्य लोगों से एक कदम आगे बढ़ रहे हैं जिन्हें अपनी मातृभाषा और अंग्रेजी के अलावा हिंदी की जानकारी भी प्राप्त हो रही है।

कक्षा में उपस्थित प्रशिक्षणार्थी

इस अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए **श्री करण सिंह,** सहायक निदेशक ने सभी प्रशिक्षार्थियों का आह्वान करते हुए कहा कि वे इन दो दिनों में अपनी भाषा संबंधी समस्याओं को नि:संकोच उनसे साझा करें, वे उनके निराकरण का हर संभव प्रयास करेंगे। उन्होंने कहा कि वे आगामी सत्रों में प्रशिक्षार्थियों को जानकारी देने के साथ-साथ मौखिक व लेखन अभ्यास भी कराएँगे ताकि उनकी समस्याओं का समाधान साथ-साथ हो सके। भारत की भाषायी विविधता की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि सरकार ने देश के कई राज्यों में त्रिभाषी सूत्र लागू किया है जिसमें एक क्षेत्रीय भाषा, हिंदी तथा एक विदेशी भाषा पढ़ाई जाती है। उन्होंने कहा कि हम भारतीय वास्तव में भाग्यशाली हैं जिन्हें प्राय: दो या दो से अधिक भाषाओं का ज्ञान होता है।

इस सत्र में उन्होंने बताया कि भाषा को संकीर्णता की भावना से नहीं देखना चाहिए जिस प्रकार अंग्रेजी भाषा में अन्य भाषा के शब्द समाहित हैं उसी प्रकार हिंदी भी अन्य देशी-विदेशी भाषा के शब्दों से समृद्ध हुई है। उन्होंने हिंदीतर भाषी प्रशिक्षणार्थियों से बंगला भाषा में संवाद कर उनकी शंकाओं का समाधान किया। प्रशिक्षार्थियों को सही व शुद्ध लेखन के बारे में बताते हुए मानक व परिवर्द्धित देवनागरी लिपि की जानकारी दी।

प्रशिक्षार्थियों को सामान्य गलतियों की जानकारी देते हुए
श्री करण सिंह, सहायक निदेशक

इस अवसर पर संकाय सदस्य ने हिंदी भाषा के व्याकरण पर चर्चा करते हुए लिंग व वचन के संबंध में सामान्यतया की जाने वाली गलतियों के बारे में जानकारी दी। इस सत्र में श्री करण सिंह ने प्रशिक्षणार्थियों को शब्दों के लिंग-निर्धारण व वचन-परिवर्तन के सामान्य नियमों की जानकारी दी। उन्होंने अनेक उदाहरणों के साथ उन्हें वाक्य संरचना की भी जानकारी देते हुए व्यक्तिगत रूप से अभ्यास कराया।

सायंकालीन सत्र में श्री सिंह ने प्रशिक्षार्थियों को इंटरनेट के माध्यम से सी-डैक द्वारा विकसित सॉफ्टवेयर लीला-प्रबोध पर अध्ययन करने की सुविधा की जानकारी देते हुए प्रबोध पर प्रशिक्षणार्थियों का पंजीकरण करवाया। उन्होंने बताया कि लीला प्रबोध में श्रव्य व दृश्य सुविधा की सहायता से शब्दों के उच्चारण और लेखन का अभ्यास सहजता से स्वयं ही किया जा सकता है। उन्होंने यह भी जानकारी दी की कि लीला साफ्टवेयर की सहायता से हम क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से भी हिंदी सीख सकते हैं। उन्होंने बताया कि यह अत्यंत सुखद है कि कुछ माननीय सांसद भी केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से हिंदी भाषा प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं जिससे हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण को बल मिला है।

24 फरवरी को प्रथम सत्र में श्री करण सिंह ने प्रशिक्षणार्थियों से वार्षिक परीक्षा के प्रश्न पत्र के प्रारूप पर चर्चा की। उन्होंने विगत वर्ष के प्रश्न पत्र पर प्रशिक्षार्थियों को अभ्यास कराया तथा उनके प्रश्नों व जिज्ञासाओं का समाधान किया। कार्यक्रम के अंतिम सत्र में में अतिथि वक्ता ने सभी सत्रों में दी गई जानकारी को प्रशिक्षार्थियों के लाभार्थ संक्षेप में पुन: दोहराया।

समापन सत्र का संचालन करते हुए श्री रमेश बौरा, हिंदी अधिकारी

समापन सत्र का संचालन करते हुए **श्री रमेश बौरा,** हिंदी अधिकारी, ने दो-दिवसीय कार्यक्रम के दौरान अतिथि वक्ता द्वारा प्रशिक्षार्थियों को दी गई जानकारी को संक्षेप में बताया। उन्होंने सभी प्रशिक्षार्थियों से कहा कि भाषा-शिक्षण में पठन और लेखन के साथ-साथ उस भाषा में बोल-चाल (वार्तालाप) और अभ्यास भी अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने यह भी कहा कि शब्दों की जानकारी होना ही पर्याप्त नहीं है उनका बारंबार उपयोग करने से वे कंठस्थ भी होंगे। इसलिए हमें भाषा शिक्षण के इन सभी पहलुओं पर ध्यान देते हुए आगे बढ़ना होगा। इस अवसर पर श्री करण सिंह ने अपने आतिथ्य व अन्य सुविधाओं के लिए संस्थान के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने प्रशिक्षण के लिए सीएसआईआर-सीरी, पिलानी द्वारा किए जा रहे प्रयास की सराहना की तथा प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रशिक्षण के संबंध में दर्शाई जा रही गंभीरता और जिज्ञासु प्रवृत्ति की भी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि पठन-पाठन हेतु अच्छे विद्यार्थियों का होना भी जरूरी है। प्रतिभागियों ने इस व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम के संबंध में प्रतिपुष्टि देते हुए कार्यक्रम को अत्यंत उपयोगी एवं आवश्यक बताया। आयोजन के दौरान सभी प्रकार की व्यवस्था करने के लिए राजभाषा प्रकोष्ठ को धन्यवाद दिया तथा कार्यक्रम में महत्वपूर्ण जानकारी देने के लिए श्री करण सिंह जी के प्रति आभार व्यक्त किया।

अतिथि वक्ता को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए श्री पी वी एल रेड्डी,सदस्य, रा.का.स.

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के वरिष्ठ सदस्य तथा संस्थान के ज्ञान संसाधन केंद्र के प्रमुख श्री पी वी एल रेड्डी ने भी संस्थान के सहकर्मियों को महत्वपूर्ण जानकारी देने के लिए केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली से आए संकाय सदस्य श्री करण सिंह के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने श्री सिंह को संस्थान की ओर से **स्मृति चिह्न** भेंट कर सम्मानित किया तथा आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी हमारे संस्थान को उनका सहयोग इसी प्रकार मिलता रहेगा।

समापन सत्र में संकाय सदस्य का आभार व्यक्त करते हुए
श्री पी वी एल रेड्डी, प्रमुख, ज्ञान संसाधन केंद्र एवं सदस्य, रा.का.स.

अंत में प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण के संबंध में महत्वपूर्ण व उपयोगी जानकारी देने, प्रश्न पत्र के प्रारूप से परिचित करवाने व तत्संबंधी अभ्यास कराने के लिए श्री रमेश बौरा ने अतिथि-वक्ता को पुन: धन्यवाद दिया।

इस प्रकार प्रबोध पाठ्यक्रम के प्रशिक्षार्थियों के लिए आयोजित यह दो-दिवसीय द्वितीय व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम संपन्न हुआ।